बाप समान फरिश्ता वर्ष

बेफिक्र सप्ताह – 2

23.12.12

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र बादशाह हूँ।

- जैसे ब्रह्मा बाबा परीक्षाओं के समय भी इस धरा पर बेफिक्र बादशाह बनकर रहे। उनकी चाल-ढ़ाल, बोलचाल सब उनके निश्चिंत जीवन की झलक दिखाते थे, उसी तरह हमें भी उन्हें फॉलो करना है। हमारे सामने तो उनकी भेंट में बहुत कम बातें आती हैं। जब भी बातें आएँ तो ब्रह्मा बाबा के जीवन को याद कर अचल-अडोल हो जाएँ।

2. **योगाभ्यास** –

अ. बापदादा का आह्वान करें और फिल करें कि बापदादा मेरे सामने आ गए...मुझे दृष्टि दे रहे हैं...दृष्टि देते हुए उन्होंने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया... और वरदानी महावाक्य उच्चारे - बच्चे ! बेफिक्र बादशाह भव...मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ...निश्चिंत भव...।

ब. ब्रह्मा बाबा के जीवन को अपने चिंतन में लायें कि कैसे वो बातों की परवाह किए बगैर बेफिक्र और योगयुक्त रहा करते थे...चट्टान पर विष्णु की मुद्रा में लेटे हुए ब्रह्मा बाबा, झूले पर बैठकर बेफिक्र स्थिति में अतिन्द्रिय आनंद का रसपान करते हुए ब्रह्मा बाबा...ऐसे ही मुझे भी बनना है...।

स. ज्ञान सूर्य बाबा मेरी आँखों के सामने हैं...उनकी तेजस्वी किरणें चारों ओर फैल रही हैं...ये किरणें मेरी सर्व समस्याओं, चिंताओं को नष्ट कर मेरे जीवन को प्रकाशित कर रही हैं...।

द. बापदादा को अपने सामने देखते हुए सारे दिन में जब भी मेरा-मेरा आए, उन सभी `मेरे` को `तेरे` में परिवर्तित करें...दिल से कहें - मेरा तो एक बाबा, बाकि सब बाबा का...ये अभ्यास हमें योगयुक्त रखेगा..।

3. **धारणा – एक बल, एक भरोसा**

- जैसे ब्रह्मा बाबा एक बल एक भरोसा थे...उनकी मदद के लिए सिवाए एक के और कोई नहीं था...उस एक के बल पर ही ब्रह्मा बाबा ने सभी समस्याओं का हँसते-हँसते सामना किया...सारी दुनिया एक तरफ थी, उनके विरुद्ध थी, उन्हें समाप्त कर देना चाहती थी लेकिन दूसरी तरफ ब्रह्मा बाबा अकेले, सिर्फ एक के सहारे अचल, अडोल और एकरस थे...।

4. **चिंतन** – ब्रह्मा बाबा इतने बेफिक्र/निश्चिंत क्यों थे ?

- बेफिक्र ब्रह्मा बाबा का एक शब्दचित्र बनाएँ।

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! अब समय है निरंतर योगयुक्त होकर साक्षात्कारमूर्त बनने का क्योंकि अनेक दुःखी और अशांत भक्त आत्माएँ अपने इष्ट देव व देवियों को ढूँढ रहे हैं। शीघ्र ही संसार में आवाज उठेगी कि हमारे इष्ट देव-देवी आ गए...जिन्हें हम ढूंढ रहे थे, वे आ गए...तब हमें उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करनी होगी इसलिये अभी से हमें स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न करते चलना है। जैसे बाबा ने हमें तृप्त किया है, हमें भी सब को तृप्त करना है।